संपादकीय

नवंबर की ठंडी हवाओं के साथ जब समय धीरे-धीरे वर्ष के अंतिम अध्याय की ओर बढ़ता है, तब मन भी भीतर झाँकने लगता है — कि इस बीते समय ने हमें क्या सिखाया, क्या बदला, और क्या छोड़ा? "शब्द क्रांति" का यह नवंबर अंक इसी आत्ममंथन की ऋतु में आपके समक्ष है — विचारों की ऊष्मा और संवेदनाओं की रोशनी लेकर।

आज जब संसार गति, चमक और क्षणिकता के मोह में उलझा है, तब साहित्य ही वह धारा है जो हमें ठहरना सिखाती है। यह हमें बताती है कि शब्द केवल अक्षर नहीं होते, वे विचारों के बीज हैं — जो जब मनुष्य के भीतर अंकुरित होते हैं, तो परिवर्तन की फसल लाते हैं। यही तो 'शब्द क्रांति' का मूल दर्शन है — विचारों से संवेदना तक, और संवेदना से परिवर्तन तक।

इस अंक में प्रस्तुत रचनाएँ — कविता, कहानी, निबंध या समीक्षा — सभी किसी न किसी रूप में हमारे समय के सच को उजागर करती हैं। वे प्रेम, पीड़ा, अन्याय, संघर्ष और उम्मीद के उन स्वरूपों को सामने लाती हैं, जिन्हें अक्सर समाज अनदेखा कर देता है। यहाँ हर रचना एक दस्तक है — चेतना के द्वार पर, मानवीयता के हृदय में।

हम मानते हैं कि साहित्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि मनुष्यता का पुनर्निर्माण है। शब्द जब विचार से मिलते हैं, तो वे 'क्रांति' बन जाते हैं। और जब वही शब्द करुणा, प्रेम और समानता का संदेश देते हैं, तब वे समाज की दिशा बदलने की क्षमता रखते हैं।

इस नवंबर अंक के माध्यम से हम अपने सभी रचनाकारों और पाठकों को नमन करते हैं — जो शब्दों से जीवन के अर्थ तलाशते हैं, जो संवेदना को वाणी देते हैं, और जो विश्वास करते हैं कि कलम अब भी परिवर्तन की सबसे सशक्त आवाज़ है।

आइए, इस ठंडे मौसम में कुछ गरम विचारों से मिलें।

आइए, शब्दों की इस क्रांति को आगे बढ़ाएँ।

- **रमाकांत यादव (सागर यादव जख्मी)**

शब्द क्रांति
अंतर्राष्ट्रीय मासिक पत्रिका
www.shabdkrantipatrika.in